शोध साहित्य SHODH SAHITYA
INTERNATIONAL PEER REVIEWED E-RESEARCH JOURNAL
(समसामयिक विषयों पर केंद्रित बहुविषयक मासिक ई-शोध पत्रिका)
E-ISSN 2584-2447
Impact Factor – SJIF 2024 = 3.621
Vol -3
Issue -2
February
2025

# सुधा अरोड़ा की कहानियों में स्त्री संघर्ष

**अनामिका सिंह**
**शोधार्थी (हिन्दी)**

**डॉ. मौसमी परिहार**
**शोध पर्यवेक्षक**
**सहायक प्राध्यापक (हिन्दी विभाग)**
**रवीन्द्रनाथ टैगोर विश्वविद्यालय, भोपाल (म.प्र.)**

**शोध सारांश**

सुधा अरोड़ा की कहानियाँ स्त्री जीवन के संघर्षों को गहराई से उजागर करती हैं, जहाँ वे पारिवारिक, सामाजिक, आर्थिक, पारंपरिक और पितृसत्तात्मक व्यवस्थाओं के बीच नारी की स्थिति को बारीकी से चित्रित करती हैं। उनकी रचनाओं में नारी पात्र शिक्षित और आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर होते हुए भी अपने निर्णयों के प्रति असमंजस में दिखाई देते हैं। उदाहरण के लिए, 'महानगर की मैथिली' कहानी की नायिका चित्रा अर्थसंघर्ष और मातृत्व के बीच जूझती रहती है, जहाँ महानगर का अर्थशास्त्र उसे मात देता है। नमक' कहानी में सिया जैसी पात्र अपनी इच्छाओं को व्यक्त नहीं कर पातीं, क्योंकि उनके पति उन्हें घर की चौखट लांघने नहीं देना चाहते। सुधा अरोड़ा ने समाज के वर्चस्ववादी केंद्रों पर निशाना साधते हुए, नारी जीवन की विसंगतियों, आर्थिक स्वायत्तता, स्त्री-पुरुष अंतःसंबंध, परंपराओं और आधुनिकता के द्वंद्व को अपनी कहानियों में प्रस्तुत किया है। प्रस्तुत अध्ययन के दौरान सुधा अरोड़ा की कहानियों में नारी पात्रों के संघर्ष को उजागर करने की मूल अवधारणाओं को समझने का प्रयास किया गया है।

**बीज शब्द**

पितृसत्तात्मक व्यवस्था, जीवन के संघर्ष, सामाजिक, आर्थिक, पारंपारिक, मातृत्व, वर्चस्ववादी आदि।

**परिचय**

सुधा अरोड़ा की कहानियाँ नारी जीवन के विभिन्न पहलुओं को उजागर करती हैं, जहाँ वे समाज की पारंपरिक सोच और आदर्शों से टकराती हैं, और नारी के आत्मसम्मान, स्वतंत्रता और अधिकारों के लिए संघर्ष को प्रमुखता से प्रस्तुत करती हैं। उनकी कहानियाँ स्त्री मनोविज्ञान और उसकी मानसिक वेदना को अत्यंत संवेदनशीलता से चित्रित करती हैं। उनके साहित्य में स्त्री पात्रों की पीड़ा, सामाजिक बंधनों से उत्पन्न मानसिक तनाव, पारिवारिक उपेक्षा और असमानता के प्रति उनके भीतर उपजने वाली घुटन को प्रभावी रूप से उकेरा गया है।

**कहानियों में चित्रित नारी पात्रों के संघर्ष के प्रमुख आयाम**

सुधा अरोड़ाजी की कहानियों में नारी पात्रों ने सिर्फ बाह्य संघर्ष नहीं किया है बल्कि वे , आंतरिक संघर्ष से भी पीड़ित रही है। उन्होने आधुनिक नारियों की पीड़ा और संघर्ष को भी अपनी कहानियों की विषयवस्तु बनाया है। उनकी कहानियों में चित्रित नारी संघर्ष के आयाम इस प्रकार से है-

**1-असुरक्षा और अकेलापन का संघर्ष**

सुधा अरोड़ा की नायिकाएँ अक्सर मानसिक असुरक्षा और अकेलेपन से जूझती हैं।
की नायिका चित्रा का संघर्ष इसी का प्रतीक है 'महानगर की मैथिली', जहाँ वह एकाकीपन, आर्थिक संघर्ष और मातृत्व के बीच फँसी हुई है। उसकी मानसिक वेदना इस बात से जुड़ी है कि आधुनिकता के बावजूद स्त्रियाँ आत्मनिर्भर होकर भी मानसिक शांति नहीं पा पातीं।

**2-दांपत्य जीवन और दमन के बीच संघर्ष**

उनकी कहानियों में स्त्रियों के वैवाहिक जीवन में मानसिक उत्पीड़न की गहरी छाप देखने को मिलती है।
'नमक' कहानी में सिया की मानसिक वेदना इस बात से उपजती है कि उसका पति उसे हर बात पर टोकता है, यहाँ तक कि खाने में नमक डालने तक पर भी। यह मानसिक नियंत्रण

स्त्री को भीतर से तोड़ता है और वह अपनी इच्छाओं को व्यक्त करने में भी असमर्थ हो जाती है।

**3-सामाजिक अपेक्षाएँ और स्त्री की पीड़ा के बीच संघर्ष**

जैसी कहानियों में यह मानसिक वेदना स्पष्ट रूप से उभर 'म वहीरहोगी तु'ती है, जहाँ स्त्री चाहे कितनी भी आत्मनिर्भर क्यों न हो जाए, समाज उसे पारंपरिक भूमिकाओं में ही देखना चाहता है। मानसिक संघर्ष इस बात से बढ़ता है कि स्त्रियाँ अपनी पहचान को बनाए रखने और सामाजिक अपेक्षाओं के बीच संतुलन नहीं बिठा पातीं।

**कहानी नमक** में पत्नी सिया को खाने में नमक को लेकर विवाद का सामना करना पड़ता है। पति उसे जलील करने का कोई मौका नहीं गंवाता। हालांकि सिया पति की सेहत को ध्यान में रखते हुए खाने में कम नमक का इस्तेमाल करती है। रोज रोज के विवाद से तंग आकर एक दिन सिया अपने पति से कह देती है, कि डॉक्टर ने कम नमक खाने के लिये कहा है। फिर भी खाना है तो सामने रखा है। इस कहानी के माध्यम से यह संदेश देने का प्रयास किया है, कि स्त्री घर के रसोई में कैद होकर जीवनयापन नहीं करना चाहती। वह स्वतंत्र रूप से परिवार का एक हिस्सा बनना चाहती है।

**कहानी घर** में एक ऐसी लड़की के जीवन को उजागर किया है, जो अपने वैवाहिक जीवन के सपने देखती है। अंदर-ही-अंदर अपने स्व' को खत्म करने लगती है। इस कहानी के माध्यम से यह संदेश देने का प्रयास किया गया है, कि समाज में ऐसी कई की लड़कियाँ परिवार की जिम्मेदारियों का निर्वाह करते हुए अपना सर्वस्व निछावर कर देती है और बदले में उन्हें परिवार से उपेक्षा ही मिलती है।

कहानी **"आधी आबादी"** में स्त्री जीवन की वेदना का प्रकटीकरण करते हुए लिखा है, कि कोने में धूल साफ करती, हर चीज को करीने से रखती हुई, हरी-कटी हुई पत्तियों से सजाकर तरह-

तरह के आकारोंवाले खूबसूरत बर्तनों में परोसती हुई और फिर रात को सबके चेहरे की तृप्त मुस्कान को अपने चेहरे पर लिहाफ की तरह जोड़कर सोती हुई।"

**4-मातृत्व और मानसिक द्वंद्व के बीच संघर्ष**

सुधा अरोड़ा ने मातृत्व के भीतर छिपी मानसिक वेदना को भी उजागर किया है। माँ बनने के बाद स्त्री की दुनिया किस तरह बदल जाती है, उसका मानसिक दबाव और आत्मसंघर्ष उनकी कहानियों में प्रमुख रूप से दिखता है।

**कहानी यह रास्ता उसी अस्पताल को जाता है,** में चित्रा और दिवाकर का प्रेम विवाह होने के बावजूद उनके दांपत्य जीवन में सदैव तनाव बना रहता है। जिसका मुख्य कारण था दिवाकर का अनैतिक संबंध। चित्रा का मन दिवाकर के अवैध संबंध को जानने के बाद विद्रोह से भर जाता है।

**कहानी 'राग देह मल्हार में** कहानी की नायिका बेनू भट्ट को अपने पति मनप्रीत का भुवनमोहिनी के साथ अवैध संबंध के बारे में जब पता चलता है। पहले तो उसे विश्वास नहीं होता। वह अपने पति को माफ नहीं करना चाहती, लेकिन पत्नी धर्म के चलते और पति की मानसिक स्थिति को देखते हुए माफ तो कर देती है, लेकिन विद्रोह साफ झलकने लगता है।

**कहानी भागमती पंडाइन का उपवास में** भागमती ऐसी स्त्री है जो अपने पति को परमेश्वर के रूप में देखती है। उसे अपने पति पर पूर्णरुप से विश्वास होता है, परंतु वही पति परमेश्वर अपनी एक छात्रा सुमेधा के साथ अनैतिक संबंध स्थापित करता है।

**5-आत्मनिर्भरता और संघर्ष**

सुधा अरोड़ा की आधुनिक नारी शिक्षित, आत्मनिर्भर और आर्थिक रूप से स्वतंत्र होते हुए भी सामाजिक और पारिवारिक ढाँचों से जूझती रहती है। ‘महानगर की मैथिली’ की नायिका चित्रा महानगर में रहकर अकेले अपने बच्चे की परवरिश करती है। वह आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर होने के बावजूद मानसिक शांति के लिए संघर्षरत है। उसकी स्वतंत्रता के बावजूद, समाज उसे

E-ISSN 2584-2447
Impact Factor – SJIF 2024 = 3.621
Vol -3
Issue -2
February
2025

एक पारंपरिक माँ और पत्नी की भूमिका में देखना चाहता है, जिससे उसमें असुरक्षा और द्वंद्व की भावना जन्म लेती है।

**कहानी 'वर्चस्व'** में नायिका विवाह के तीस-पैतिस साल बाद अपने घर में अपने अधिकारों को तलाशने की कोशिश करती है, परंतु वह मान-सम्मान उसे न देकर घर की एक कुतिया को दिया जाता है।

**'उघड़ा हुआ स्वेटर'** कहानी में लेखिका ने शिवा की दोनों बेटियों के माध्यम से स्पष्ट किया है कि एक नारी का सार्थक जीवन विवाह के बंधन में बंधना नहीं, बल्कि अपने अस्तित्व को बचाए रखने में है।

**कहानी सत्ता संवाद** की नायिका बाहर काम करके अपने निक्कमे पति और बेटे का पालन-पोषण करती है। यह अपने पति के अवैध संबंध के बारे में जानती है। वह स्पष्ट रूप से अपने पति से कहती है कि "याद रखना, मुझसे कुछ छिपा नहीं है।

**6-वैवाहिक जीवन और दांपत्य असमानता के बीच संघर्ष**

'नमक'कहानी की नायिका सिया इस बात का प्रतीक है कि एक शिक्षित और आत्मनिर्भर स्त्री भी दांपत्य जीवन में मानसिक उत्पीड़न झेलती है। उसका पति छोटी-छोटी बातों पर उसे टोकता है, जिससे वह अपनी इच्छाओं को दबाने पर मजबूर हो जाती है। यह दिखाता है कि आधुनिक नारी के लिए केवल आर्थिक स्वतंत्रता पर्याप्त नहीं, बल्कि मानसिक और भावनात्मक स्वतंत्रता भी आवश्यक है।

**कहानी उघडा हुआ स्वेटर** कहानी की नायिका शिवा अपने पति के अत्याचारों का विरोध करके अपने दोनों बेटियों के साथ अलग रहने लगती है। वह अपने दोनों बेटियों को सामर्थ्यवान बनाना चाहती हैं, ताकि पुरुषसत्तात्मक समाज में वह उसकी तरह शोषित न हो।

**कहानी बुत जब बोलते हैं** में देवयानी के अंदर छिपे हुए मों के सामर्थ्य को बाहर निकालने का कार्य किया है। देवयानी और उसका पति देवाशीष दोनों पेशे से डॉक्टर है, परंतु देवाशीष से अधिक शोहरत देवयानी की होती है. फिर भी घर के सारे फैसले देवाशीष ही करता था।

**कहानी 'भागमती पंडाइन का उपवास** कहानी में भागमती अपने पति को सपने में मारकर

शोध साहित्य SHODH SAHITYA
INTERNATIONAL PEER REVIEWED E-RESEARCH JOURNAL
(समसामयिक विषयों पर केंद्रित बहुविषयक मासिक ई-शोध पत्रिका)
E-ISSN 2584-2447
Impact Factor – SJIF 2024 = 3.621
Vol -3
Issue -2
February
2025

अपने सामर्थ्य का परिचय देती है। पचास वर्ष से एक आदर्श पत्नी बनकर प्रोफेसर पंडा के घर-परिवार को सँभालती है।

**कहानी ताराबाई चॉल कमरा नंबर एक सौ पैतीस** में कहानी की नायिका का पति विकृत सेक्स का आदी है। जिसके कारण वह नशे में धुत्त अपनी पत्नी को शारीरिक एवं मानसिक रूप से प्रताड़ित करता है।

कहानी महानगर की मैथली में बंबई जैसे महानगर में नारी की समस्याओं और उसके संघर्ष का सूक्ष्म अंकन किया है। वर्तमान समाज में महानगरीय नारी अर्थ प्राप्ति के प्रति संघर्ष कर रही है। इस कहानी के इस संवाद को देखिए...

"यहाँ का हर इन्सान इतना संतुष्ट सुखी और अवकाश प्राप्त दिखाई देता था कि अपनी वबई की भाग-दौड वाली मशीनी जिदंगी उसे भीतर से तोड़ती हुई महसूस होती थी।"

इस कहानी के माध्यम से सुधाजी ने अनेक प्रकार की कुरीतियों और प्रथाओं से संघर्ष कर रही नारी के विविध रूपों का चित्रण किया है।

कहानी "अवलप जीवन हाय तुम्हारी और यही कहानी आंचल में है दूध और आँखों में पानी" के जरिये नारी अस्मिता के सवाल खड़े किये है। इन कहानी पात्रों की नारी मातृत्व, त्याग, समर्पण, संघर्ष स्वचेतना का स्वर उभरा है।

कहानी देह घरे का दंड' मे नारीधार्मिक विद्रोह करती है। इस कहानी में विशाखा के जरिये सुधाजी ने धार्मिक भावनाओं का विद्रोह परिलक्षित होता है।

"विशाखा को लगता वह एक जंगल में भटक गई है। चारों ओर भेड़िये ही भेड़िये हैं, चाहे वह गेरूए कपड़े में हो या सफेद कपड़ों में, लगोटनुमा धोती में हो या सूट बूर टाई में। भेड़िये ही भेड़िये। नत्लू सिर्फ अंधेरे गलियारे से नहीं, कहीं से भी कोई भी चेहरा पहनकर आ सकता है।

कहानी 'स्वप्नजीवी' की पात्र 'मित्रा दी' आधुनिक नारी का प्रतिनिधित्व करती है। वैवाहिक जीवन के संस्कारों के प्रति उसके मन में आक्रोश है। वह कहती है – "हिन्दुस्तानी लड़कियों के दिमाग ही मजबूत नहीं होते। हुंह एकनिष्ठ बनती हैं। पूछो भला! वह उधर विदेशी

लड़की के साथ गुलछर्रे उड़ा रहा है और यह उसके नाम को रो रही है। जिसके साथ इतने महीने 'टेंशन' में काट दिए उसके प्रति भावुकता ?"

**7-सामाजिक अपेक्षाएँ और स्त्री की पहचान के बीच संघर्ष**

'रहोगी तुम वही' कहानी में स्त्री की स्वतंत्रता को समाज के तय किए गए दायरे में समेटने का प्रयास किया जाता है। नायिका चाहे जितनी भी सक्षम हो, समाज उसे केवल पारंपरिक भूमिकाओं—पत्नी, माँ या बेटी—में देखना चाहता है।

**कहानी स्वप्नजीवी में** तलाकशुदा स्त्री की मनोदशा की कहानी है, जिसने भारतीय स्त्री का प्रतिबिंब दिखाई देता है। स्त्री शारीरिक रूप से भले ही वह पति से अलग थी, परंतु मन से उससे अलग नहीं हो पाती।

**कहानी 'पति परमेश्वर** में भी पुरुष की इसी मानसिकता का स्पष्टीकरण हुआ है। नायिका का पति प्रसिद्धि पाने के बाद उसे बिना वजह छोड़ देता है।

**कहानी 'उधडा हुआ स्वेटर** की शिया भी अपने पति के अत्याचार को सहते-सहते उसकी सहनशीलता समाप्त हो जाती है और वह अपनी दोनों बेटियों के साथ पति को छोड़कर चली जाती है।

**निष्कर्ष**

सुधा अरोड़ा की कहानियों में मानसिक वेदना केवल व्यक्तिगत स्तर तक सीमित नहीं रहती, बल्कि यह सामाजिक संरचनाओं और पितृसत्ता की देन है। उनकी नायिकाएँ मानसिक रूप से थकी हुई, सामाजिक बंधनों में जकड़ी हुई और अपने अस्तित्व की खोज में संघर्षरत दिखाई देती हैं। उनका लेखन नारी मन की सूक्ष्म अनुभूतियों को उजागर करता है और पाठकों को इस पीड़ा को महसूस करने पर मजबूर करता है।सुधा अरोड़ा की कहानियाँ समकालीन नारी की जटिलताओं, संघर्षों और आत्मनिर्भरता को गहराई से चित्रित करती हैं। उनकी नायिकाएँ पारंपरिक भूमिकाओं से आगे बढ़कर अपनी स्वतंत्र पहचान बनाने का प्रयास करती हैं, लेकिन समाज और परिवार की अपेक्षाएँ, पितृसत्तात्मक मानसिकता और आत्मसंघर्ष उन्हें मानसिक वेदना और द्वंद्व में डाल देते हैं।सुधा अरोड़ा की आधुनिक नारी केवल एक परंपरागत ढाँचे में

बंधी हुई स्त्री नहीं है, बल्कि वह अपनी पहचान, स्वतंत्रता और अधिकारों के लिए संघर्षरत है। उनकी कहानियाँ इस बात को उजागर करती हैं कि आधुनिकता के बावजूद, स्त्रियाँ मानसिक, सामाजिक और पारिवारिक चुनौतियों से घिरी हुई हैं।

**संदर्भ ग्रंथ सूची**

1. अरोड़ा, सुधा, एक औरत की नोटबुक (कथा विमर्श), पेज संख्या. 43, मानव प्रकाशन, कोलकाता.
2. अरोड़ा, सुधा, भागमती पंडाइन का उपवास यानी करवाचौथ पर भरवां करेले, बुत जब बोलते हैं, पेज संख्या. 114, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद,
3. अरोड़ा, सुधा, एक औरत की नोटबुक (कथा विमर्श), पेज संख्या. 46, मानव प्रकाशन, कोलकाता.
4. अरोड़ा, सुधा, काँसे का गिलास (कहानी संग्रह), पेज संख्या. 120, आधार प्रकाशन, हरियाणा.
5. अरोड़ा, सुधा, एक औरत : तीन बट्टा चार (कहानी संग्रह), पेज संख्या. 35, सुधा अरोड़ा, बोधि प्रकाशन, जयपुर.
6. अरोड़ा, सुधा, बगैर तराशे हुए (कहानी संग्रह), पेज संख्या. 69, इकाई प्रकाशन, इलाहाबाद.
7. वही, पेज संख्या. 71
8. अरोड़ा, सुधा, स्त्रीर शक्ति की भूमिका से उठते कई सवाल (विमर्श), स्त्रीकाल पत्रिका.
9. राय, त्रिभुवन, पीड़ित के पक्ष की कहानी, अंक : मार्च-अप्रैल 2009, पेज संख्या. 11 पुस्तक-वार्ता, म.गां.अं.हिं.वि., वर्धा.